

Review Article

फीजी में हिंदी के प्रयोग-वर्धन हेतु व्यावहारिक उपाय: शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं नीतिगत परिप्रेक्ष्य

Subashni Lata Kumar¹, Shyamla Lata Chand²

¹Assistant Professor Fiji National University

²Senior Curriculum Specialist Hindi Ministry of Education Fiji

DOI: <https://doi.org/10.24321/2456.0510.202607>

INFO

Corresponding Author:

Kumar SL, Fiji National University

Email Id:

Subashni.Kumar@fnu.ac.fj

Orcid Id:

<https://orcid.org/0000-0003-1228-5878>

How to cite this article:

Kumar SL & Chand SL, फीजी में हिंदी के प्रयोग-वर्धन हेतु व्यावहारिक उपाय: शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं नीतिगत परिप्रेक्ष्य, Anu: a, Mul, Int, Jour, 2026; 11(1&2): 49-53.

Date of Submission: 2026-02-12

Date of Acceptance: 2026-03-10

ABSTRACT

यह शोध आलेख फीजी में हिंदी भाषा के प्रयोग-वर्धन हेतु व्यावहारिक उपायों का विश्लेषण शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं नीतिगत परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करता है। फीजी में हिंदी केवल एक संप्रेषण माध्यम नहीं, बल्कि प्रवासी भारतीय समुदाय की ऐतिहासिक स्मृति, सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक निरंतरता का आधार रही है। गिरमिट काल से लेकर वर्तमान में हिंदी ने प्रवासी भारतीयों को एक सूत्र में बाँधने वाली संपर्क भाषा की भूमिका निभाई है। किंतु समकालीन समय में अंग्रेज़ी के वर्चस्व, शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन, वैश्वीकरण, डिजिटल संस्कृति तथा रोजगारोन्मुख दृष्टिकोण के कारण हिंदी के प्रयोग में निरंतर गिरावट देखी जा रही है। यह आलेख फीजी में हिंदी की भाषिक विविधता (फीजी हिंदी, मानक हिंदी और संस्कृतनिष्ठ हिंदी), संवैधानिक मान्यता, शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका, सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों के योगदान तथा धार्मिक परंपराओं के माध्यम से भाषा संरक्षण की प्रक्रिया का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि हिंदी केवल अकादमिक विषय नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना, सामुदायिक पहचान और सामाजिक मूल्यों की भाषा है। अतः हिंदी का संरक्षण और संवर्धन केवल भाषा नीति का विषय नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अस्तित्व, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रीय पहचान से जुड़ा व्यापक सरोकार है।

मुख्य शब्द: फीजी, भाषा संरक्षण, भाषा नीति, प्रवासी चेतना, सांस्कृतिक पहचान, हिंदी शिक्षण, गिरमिटिया इतिहास

प्रस्तावना

भाषा किसी भी समुदाय की सांस्कृतिक पहचान, ऐतिहासिक स्मृति और सामाजिक निरंतरता की सबसे महत्वपूर्ण पूँजी होती है। यह केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, परंपरा और सामूहिक अनुभवों की संवाहक होती है। फीजी के संदर्भ में हिंदी भाषा का महत्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि यह गिरमिटिया इतिहास और प्रवासी जीवन के अनुभवों से जुड़ी हुई है। उदाहरण स्वरूप, फीजी के अनेक ग्रामीण और शहरी परिवारों में आज भी पारिवारिक कहानियाँ, लोकगीत और धार्मिक प्रसंग हिंदी के माध्यम से ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित होते हैं। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अंग्रेज़ी के बढ़ते प्रभाव के कारण हिंदी के प्रयोग में आई कमी, केवल भाषायी नहीं बल्कि सांस्कृतिक चिंता का विषय बन गई है। यह शोध आलेख फीजी में हिंदी की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करते हुए उसके संरक्षण और संवर्धन हेतु शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं नीतिगत स्तर पर व्यावहारिक उपायों को प्रस्तुत करता है।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत से आए गिरमिटिया मजदूरों ने अपना देश तो त्यागा परन्तु अपनी भाषिक और सांस्कृतिक संपत्ति को कठिन काल में भी कायम रखा। वे बहुत कम संपत्ति साथ लाए थे मगर अपनी मातृभाषा की धरोवर उनकी अभौतिक संपत्ति का हिस्सा जरूर थी। इस प्रकार उनकी प्रांत की भाषाएं जैसे अवधी, भोजपुरी, ब्रज, तमिल, तेलुगु, मलायम, पंजाबी, आदि भाषाएं व बोलियाँ फीजी पहुँची (कंवल, 1980)। इनमें से अधिकांश मजदूर हिंदी बोलते थे, कुछ लोग लिखते-पढ़ते भी रहे इसलिए सामाजिक विविधताओं से ऊपर उठकर हिंदी भाषा ही इन प्रवासी भारतीयों को एक सूत्र में बाँधने वाली संपर्क भाषा बनी। जहाँ प्रवासी भारतीयों ने फीजी देश को अपना खून पसीना बहाकर आबाद किया वहाँ मातृभाषा हिंदी भाषा की ज्योति को भी सदा जलाए रखा। यह आलेख फीजी में हिंदी की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए, भविष्य की ओर संकेत करेगा।

गिरमिट काल के दौरान फीजी ब्रिटिश सरकार के आधीन थी और उपनिवेशिक प्रभाव के कारण हिंदी की उपभाषाओं और बोलियों में अंग्रेज़ी, ई-तऊकई और देशज शब्दों का मिश्रण हुआ। इस कारण इसकी प्रकृति और स्वरूप में परिवर्तन होने लगा, और यह एक धारा की ओर मुड़ने लगी जिसके फलस्वरूप यहाँ 'फीजी हिंदी' भाषा की उत्पत्ति हुई (शर्मा, 1998)। फीजी हिंदी यहाँ की बोलचाल की भाषा बनी और जात-पात, धर्म, वर्ग के भेद-भाव मिटाती हुई एकता और प्रेम के सूत्र में गिरमिटिया मजदूरों को बाँधती गई। शिक्षण और औपचारिक स्थलों पर मानक हिंदी को मान्यता दी गई पर व्यावहारिक भाषा के रूप में फीजी हिंदी का प्रचलन है। फीजी हिंदी को व्याकरणिक दृष्टि से अशुद्ध मानकर (शर्मा, 2004) शिक्षा के क्षेत्र में खड़ी बोली हिंदी की साक्षरता पर बल दिया गया। यद्यपि मानक हिंदी की तुलना में फीजी हिंदी को कम महत्वपूर्ण समझा जाता है (सुब्रमनी, 2004) तथापि इसमें साहित्यिक कृतियों का सृजन भी हुआ है, जिनमें रैमंड पिल्लै का 'अधूरा सपना' और सुब्रमनी का 'डउका पुराण' और 'फीजी माँ' प्रमुख हैं। भाषा बहता नीर है, उसे बहने के लिए छूट देनी चाहिए, ताकि वह बहती रहे और विकसित होती रहे। मेरे विचार में फीजी हिंदी बोलने वाला आसानी से हिंदी ग्रहण कर लेता है इसलिए फीजी हिंदी को भी प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

इस तरह फीजी में हिंदी तीन रूपों में प्रयुक्त होती है; फीजी हिंदी, मानक हिंदी और संस्कृतनिष्ठ हिंदी। उदाहरणस्वरूप, दैनिक संवाद में "तुम्हार नाम कौनची/ हम जाता घरे" जैसी फीजी हिंदी प्रयुक्त होती है, जबकि विश्वविद्यालयों में प्रेमचंद, कंवल या महादेवी वर्मा के पाठ मानक हिंदी में पढ़ाए जाते हैं। मंदिरों और रामायण मंडलियों में संस्कृतनिष्ठ हिंदी का प्रयोग होता है। यह भाषिक विविधता छात्रों के लिए सीखने की प्रक्रिया को चुनौतीपूर्ण बना देती है।

फीजी एक बहुभाषिक राष्ट्र है, जहाँ अंग्रेज़ी, फ़िजियन और हिंदी तीनों भाषाएँ समानांतर रूप से प्रचलित हैं। फीजी में हिंदी भाषा को संवैधानिक स्तर पर मान्यता प्राप्त है, जो इसके सामाजिक और राष्ट्रीय महत्व को रेखांकित करती है। फीजी के संविधान (2013) के अनुसार, अंग्रेज़ी, फ़िजियन और हिंदी देश की राष्ट्रीय भाषाएँ हैं।

यह संवैधानिक स्वीकृति हिंदी को केवल एक सामुदायिक या विरासत-भाषा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पहचान का अभिन्न अंग बनाती है। मगर व्यवहार में अंग्रेज़ी का प्रभुत्व शिक्षा, प्रशासन और रोजगार के क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, अधिकांश सरकारी दस्तावेज़, विश्वविद्यालयीय व्याख्यान और औपचारिक संचार अंग्रेज़ी में होते हैं। इसके परिणामस्वरूप, आज बच्चे घर में भी अंग्रेज़ी का प्रयोग करने लगे हैं, जिससे हिंदी का प्राकृतिक भाषा-पर्यावरण कमजोर पड़ रहा है।

हिंदी शिक्षण का उद्देश्य केवल पाठ्यपुस्तक आधारित ज्ञान तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि छात्रों में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने जैसे चारों भाषिक कौशलों का समुचित विकास करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, कक्षा में केवल व्याकरण पढ़ाने के बजाय छात्रों से संवाद अभ्यास, लघु भाषण, समूह चर्चा और रचनात्मक लेखन कराना अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकता है। हिंदी भाषा के संरक्षण और प्रसार में धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। श्री सनातन धर्म प्रतिनीधि सभा, आर्य समाज, संगम, गुजरात सोसाइटी तथा अन्य सामाजिक संगठनों ने फीजी में विद्यालयों की स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। इन संस्थाओं द्वारा स्थापित स्कूलों में गणित, विज्ञान और अन्य आधुनिक विषयों के साथ-साथ हिंदी भाषा के शिक्षण और अध्ययन पर विशेष बल दिया गया।

फीजी के शिक्षामंत्रालय तथा शैक्षणिक संस्थानों के माध्यम से हिंदी केवल एक विषय के रूप में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिक शिक्षा और सामुदायिक पहचान के वाहक के रूप में फीजी की धरती पर विकसित हुई। उदाहरणस्वरूप, विद्यालयों में हिंदी पाठ्यक्रम के अंतर्गत भाषा-अभ्यास के साथ-साथ भजन, कथा-वाचन, रामायण पाठ और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी स्थान दिया गया, जिससे विद्यार्थियों में भाषा के प्रति आत्मीयता और गर्व की भावना उत्पन्न हुई। इन सामाजिक संस्थाओं के प्रयासों ने फीजी में हिंदी को पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवंत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यद्यपि वर्तमान समय में शिक्षा-प्रणाली में परिवर्तन और अंग्रेज़ी माध्यम के विस्तार के कारण इन संस्थागत प्रयासों का प्रभाव कुछ हद तक सीमित हुआ है, फिर भी हिंदी भाषा की नींव सुदृढ़ करने में इन संगठनों का योगदान ऐतिहासिक और शैक्षणिक दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान है।

फीजी में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में तीन प्रमुख विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। द यूनिवर्सिटी ऑफ़ द साउथ पैसिफिक (USP) सुवा में स्थित एक अंतरराष्ट्रीय स्तर का क्षेत्रीय विश्वविद्यालय है, जो कई प्रशांत द्वीपीय देशों के छात्रों को शिक्षा प्रदान करता है। फीजी नेशनल यूनिवर्सिटी (FNU) देश का एक प्रमुख सार्वजनिक विश्वविद्यालय है, जिसके विभिन्न कैंपस नासीनू, लौटोका, बा और लम्बासा जैसे क्षेत्रों में स्थित हैं और यह व्यावसायिक, तकनीकी तथा शैक्षणिक शिक्षा का व्यापक विस्तार करता है। वहीं द यूनिवर्सिटी ऑफ़ फीजी लौटोका में स्थित एक निजी विश्वविद्यालय है, जो स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। ये तीनों विश्वविद्यालय मिलकर फीजी के शैक्षणिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

उच्च शिक्षा संस्थानों में हिंदी विषय के प्रति छात्रों की घटती संख्या एक गंभीर शैक्षणिक चुनौती है। उदाहरण के लिए, जहाँ पहले हिंदी विभागों में पर्याप्त नामांकन होता था, वहीं अब कई पाठ्यक्रम न्यूनतम छात्र संख्या के कारण संघर्ष कर रहे हैं। छात्रों में यह धारणा प्रबल होती जा रही है कि हिंदी पढ़ने से रोजगार के अवसर सीमित हैं, जबकि व्यवसाय, आईटी और विज्ञान विषयों को अधिक व्यावहारिक माना जाता है। वर्तमान पीढ़ी हिंदी को भौतिक दृष्टि से देख रही है और अपनी भाषिक परंपरा को कायम रखने में रूचि नहीं ले रही हैं। हिंदी अध्ययन के प्रति घटती रुचि का एक प्रमुख कारण अभिभावकों की नकारात्मक धारणा है। माता-पिता यह मानते हैं कि हिंदी पढ़ने-लिखने से कोई व्यावहारिक लाभ नहीं होता और केवल हिंदी बोलना व समझना ही पर्याप्त है। इस सोच के कारण हिंदी को शैक्षणिक रूप से तिरस्कृत किया जाने लगा है, जिसके परिणामस्वरूप हिंदी पढ़ने-लिखने वाले विद्यार्थियों की संख्या लगातार घटती जा रही है। यह प्रवृत्ति भाषा के दीर्घकालीन शैक्षणिक और सांस्कृतिक विकास के लिए गंभीर चुनौती है।

हिंदी शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए भावनात्मक जुड़ाव अत्यंत आवश्यक है। जब विद्यार्थियों को यह अहसास कराया जाता है कि हिंदी उनके पूर्वजों की भाषा है, रामायण पाठ की भाषा है और पारिवारिक संस्कारों की भाषा है, तब वे इसे अधिक आत्मीयता से अपनाते हैं। उदाहरणस्वरूप, जब छात्र गिरमिटिया इतिहास पर आधारित कहानियाँ या अपने परिवार की स्मृतियों पर लेखन करते हैं, तो उनकी भाषा-रुचि स्वाभाविक रूप से बढ़ती है।

संत कबीरदास कहते हैं:

“पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम के, पढ़े सो पंडित होय।”

इस दोहे में कबीर यह स्पष्ट करते हैं कि केवल पुस्तकों का अध्ययन पर्याप्त नहीं है; सच्चा ज्ञान और विद्वत्ता प्रेम, अनुभव और समझ से उत्पन्न होती है। फीजी में हिंदी भाषा के अध्ययन के संदर्भ में यह दोहा अत्यंत प्रासंगिक है। यह संदेश देता है कि भाषा का केवल अकादमिक अध्ययन पर्याप्त नहीं है; हिंदी को समझना, बोलना, सुनना और जीवन में प्रयोग करना आवश्यक है। यही प्रक्रिया विद्यार्थियों को न केवल भाषाई कौशल देती है, बल्कि उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों और सामाजिक पहचान से भी जोड़ती है।

भाषा और संस्कृति का आपसी संबंध अत्यंत गहरा होता है, और हिंदी के विकास में धार्मिक-सांस्कृतिक ग्रंथों की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही है। रामचरितमानस तथा कबीरदास जैसे संतों की वाणी ने न केवल हिंदी भाषा को समृद्ध किया, बल्कि सामाजिक और नैतिक मूल्यों को भी सुदृढ़ किया। गिरमिट काल में, जब प्रवासी समाज निराशा और संघर्ष की चरम स्थितियों से गुजर रहा था, तब गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस ने साहस, सांत्वना और सांस्कृतिक संरक्षण का कार्य किया तथा फीजी में भाषा, धर्म और सभ्यता की रक्षा करने वाली प्रहरी के रूप में स्थापित हुई।

समाज में हिंदी की वर्तमान स्थिति के संदर्भ में रामायण मंडलियों से की गई भेंटवार्ताओं से यह तथ्य सामने आया कि यद्यपि मंगलवार को नियमित रामायण पाठ की परंपरा कई वर्षों से चली आ रही है, फिर भी अब कई मंडलियाँ इसे नियमित रूप से संचालित नहीं कर पा रही हैं। एक रामायण मंडली के प्रधान के अनुसार, इसका मुख्य कारण यह है कि मंडली में केवल कुछ ही सदस्य ऐसे हैं जो रामायण पाठ को शुद्ध और सुचारु रूप से पढ़ने में सक्षम हैं। यह स्थिति धार्मिक परंपराओं के साथ-साथ हिंदी भाषा के सतत प्रयोग में आ रही गिरावट को भी रेखांकित करती है।

हिंदी संवर्धन के लिए सामुदायिक और नीतिगत स्तर पर ठोस कदम आवश्यक हैं। इन परिस्थितियों के आधार पर यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों में अंग्रेज़ी भाषा के साथ-साथ हिंदी और इ-तौकेड भाषा को तेरहवीं कक्षा तक अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाए। द्विभाषिक या बहुभाषिक शिक्षा अपनाने से युवाओं का आत्मिक, मानसिक तथा सांस्कृतिक विकास संभव होगा। इसके साथ ही समाज में हिंदी के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए माता-पिता को अपनी मातृभाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने हेतु प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है। हिंदी को केवल भौतिक या रोजगारपरक दृष्टि से देखने के बजाय, इसे भाषा, संस्कृति, सभ्यता और परंपरा के संरक्षण के माध्यम के रूप में समझना होगा। हिंदी सीखने और पढ़ने का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़कर उन्हें जीवित रखने में सक्षम बनाना है। अतः हिंदी भाषा के संरक्षण और संवर्धन से जुड़े नीतिगत और शैक्षणिक कदमों को शीघ्र एवं प्रभावी रूप से लागू किए जाने की आवश्यकता है।

मनोरंजन भी भाषा को सहज और लोकप्रिय बनाने का प्रभावी साधन है। उदाहरण के लिए, गिरमिट, प्रवासी जीवन और पारिवारिक संबंधों पर आधारित नाटकों और स्किट्स में भाग लेने से छात्र हिंदी को व्यवहारिक रूप में सीखते हैं। इसी प्रकार, भजन संध्या, रामलीला, कविता पाठ और अंताक्षरी जैसे कार्यक्रम भाषा को आनंद से जोड़ते हैं। डिजिटल माध्यमों में हिंदी शॉर्ट वीडियो, पॉडकास्ट और यूट्यूब वेब-सीरीज़ युवाओं को विशेष रूप से आकर्षित करती हैं। उदाहरणस्वरूप, “फीजी की हिंदी” पर आधारित लघु वीडियो या हास्य संवाद छात्रों को अपनी बोली पर गर्व करने के लिए प्रेरित करते हैं।

हिंदी को करियर से जोड़ना छात्रों की रुचि बढ़ाने का एक प्रभावी और व्यावहारिक उपाय है। अनुवाद अध्ययन, मीडिया लेखन और डिजिटल ह्यूमैनिटीज़ जैसे पाठ्यक्रम न केवल भाषा-ज्ञान बढ़ाते हैं, बल्कि छात्रों को रोजगारोन्मुख व्यावसायिक कौशल भी प्रदान करते हैं। उदाहरणस्वरूप, हिंदी-अंग्रेज़ी अनुवाद, रेडियो एवं मीडिया स्क्रिप्ट लेखन, डिजिटल कंटेंट निर्माण तथा सोशल मीडिया लेखन जैसे क्षेत्रों में छात्रों के लिए नए और व्यापक अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षकों की निरंतर आवश्यकता तथा बी.एड. जैसे शिक्षक-प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में हिंदी की सशक्त भूमिका, इस विषय को एक स्थायी, सम्मानजनक और संभावनाशील करियर विकल्प के रूप में स्थापित करती है।

निष्कर्ष

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि फीजी में हिंदी का विकास केवल शैक्षणिक प्रयास नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण और सामूहिक पहचान से गहराई से जुड़ा हुआ है। जब शिक्षा, मनोरंजन, डिजिटल माध्यम और नीतिगत सहयोग समन्वित रूप से कार्य करते हैं, तब भाषा समाज में पुनः सशक्त रूप में स्थापित होती है। हिंदी की मजबूती हमारे घरों, शिक्षण संस्थानों और आने वाली पीढ़ियों की चेतना में निहित है। भावनात्मक जुड़ाव, सांस्कृतिक आत्मीयता, शैक्षणिक सुधार, डिजिटल माध्यमों का सकारात्मक उपयोग तथा नीतिगत समर्थन हिंदी को एक सशक्त, जीवंत और प्रभावी भाषा के रूप में पुनः स्थापित कर सकते हैं, जिससे भावी पीढ़ियाँ अपनी भाषिक विरासत से जुड़ी रह सकेंगी।

संदर्भ ग्रंथ

1. कंवल, जोगिन्द्र सिंह. (1980). A hundred years of Hindi in Fiji 1879–1979. Fiji Teachers Union.
2. गुवार्चिन, होरिसिया. (2010). Mother tongue: The language of heart and mind. The Fountain Magazine, Issue 76. <http://langpolicy.saschina.wikispaces.net/file/view/cumminsENG.pdf>
3. निशा, फरजाना. (2015, November 23). No more Hindi courses to be offered at USP. Fiji News. <http://www.fbc.com.fj/fiji/35082/no-more-hindi-courses-to-be-offered-at-usp->
4. शर्मा, नेत्र. (2004). फीजी में हिंदी का व्यवहार क्षेत्र. In ओ. प्र. केजरीवाल (Ed.), विदेश में हिंदी: स्थिति और संभावनाएं. नई दिल्ली, भारत.
5. शर्मा, विवेकानंद. (1998). फीजी में हिंदी भाषा और उसका सरल इतिहास. हिंदी परिचय, South Pacific University, Suva. Retrieved from <http://www.abhivyakti-hindi.org/snibandh/2006/fiji-hindi/fiji-hindi1.htm>
6. सुब्रमणी. (2004). प्रवासी भारतीय और हिंदी: फीजी. In ओ. प्र. केजरीवाल (Ed.), विदेश में हिंदी: स्थिति और संभावनाएं. नई दिल्ली, भारत.
7. फीजियन गवर्नमेंट. (2014). Compulsory teaching of vernacular in schools begins. <http://www.fiji.gov.fj/Media-Center/Press-Releases/COMPULSORY-TEACHING-OF-VERNACULARS-IN-SCHOOLS-BEGI.aspx>
8. शिक्षा मंत्रालय, Heritage & Arts. (2015). हिंदी भाषा पाठ्यक्रम. पाठ्यक्रम विकास विभाग, फीजी.